अध्याय-द्वितीय

संबंधित साहित्य का पुनरावलोकन

अध्याय - द्वितीय

संबंधित साहित्य का पुनरावलोकन

2.0 भूमिका -

साहित्य का पुनरावलोकन प्रत्येक अनुसंधान की प्रक्रिया का एक महत्वपूर्ण कदम है चाहे वो किसी भी क्षेत्र का हो। शोध कार्य के अंतर्गत साहित्य का पुनरावलोकन एक प्रारंभिक अनिवार्य प्रक्रिया है क्योंकि यह व्याख्या की जाने वाली समस्या की पुरी तस्वीर प्रकट करता है। संबंधित साहित्य से तात्पर्य अनुसंधान की समस्या से संबंद्ध उन सभी प्रकार की पुस्तकों, ज्ञान कोषो, पत्र-पत्रिकाओं, प्रकाशित तथा प्रकाशित शोध प्रबंधों एवं अभिलेखो आदि से है, जिनके अध्ययन से अनुसंधानकर्ता को अपनी समस्या के चयन, परिकल्पनाओं के निर्माण अध्ययन की रूपरेखा तैयार करने एवं कार्य को आगे बढ़ाने में सहायता मिलती हैं। संबंधित साहित्य के अध्ययन के बिना अनुसंधानकर्ता का कार्य अंधेरे में तीर चलाने के समान होगा। इसके अभाव में उचित दिशा में अनुसंधान को नहीं बढ़ाया जा सकता। जब तक उसे ज्ञान न हो कि उस क्षेत्र में कितना कार्य हो चुका है, किस विधि से कार्य किया गया है, तब तक वह न तो समस्या का निर्धारण कर सकता है और न ही इस दिशा में सफल हो सकता है।

2.1 साहित्य के पुनरावलोकन से लाभ-

1. जो अनुसंधान कार्य पहले अन्य अनुसंधानकर्ता द्वारा किया जा चुका है, वह पुनः किया जा सकता है।
2. ज्ञान के क्षेत्र के विस्तार के लिए आवश्यक है कि अनुसंधानकर्ता को यह ज्ञान हो कि ज्ञान की वर्तमान सीमा कहाँ पर है। वर्तमान ज्ञान की जानकारी के पश्चात ही ज्ञान आगे बढ़ाया जा सकता है।

3. पूर्व साहित्य के पुनरावलोकन से अनुंसधानकर्ता को अपने अनुसंधान के विधान की रचना के संबंध में अर्न्तदृष्टि प्राप्त हो सकती है।

4. पूर्व अनुसंधानों के अध्ययन में अन्य संबंधित नवीन समस्याओं का पता लगता हैं।

5. सत्यापन करने के लिए कुछ अनुसंधानों को नवीन दशाओं में करने की आवश्यकता होती है।

2.2 संबंधित साहित्य का पुनरावलोकन

❖ **बुद्धिसागर, मिना, सनसनवाल, डी.एन.1991** ने बी.एड. प्रशिक्षाणार्थी की उपलब्धि शिक्षण व्यवसाय के प्रति व्यहार बुद्धि अभिवृत्ति और उनके अन्तर संबंध के असर का अध्ययन।

उद्देश्य– प्रशिक्षाणार्थियों में शिक्षण व्यवसाय के प्रति व्यवहार, बुद्धि, अभिवृत्ति का असर एवं उपलब्धि पर उनके अन्तर संबंधों का अध्ययन करना।

निष्कर्ष– प्रशिक्षाणार्थियों की उपलब्धि पर उनके अभिवृत्ति का कोई प्रभाव नहीं पड़ा जबकि बुद्धि का उपलब्धि पर प्रभाव दिखाई देता है।

❖ **मिस्त्री ओ.सी.ने (1988)**

ग्रामीण, शहरी और बिन गुजराती कॉलेज और माध्यमिक स्कूल के शिक्षकों की अभिवृत्ति, मूल्य और व्यक्तित्व के लक्षणों का तुलनात्मक अध्ययन किया। इसमें उन कारणों को खोजा गया जिनसे मूल्यों, अभिवृत्तियों और शहरी, ग्रामीण तथा अनौपचारिक गुजराती शिक्षकों के जीवन जीने के तरीकों में अन्तर पाया गया। इस अध्ययन हेतु आलपोर्ट बर्नन लिण्डजे की प्रश्नावली एडवर्ड की व्यक्तिगत महव अनुसूची और मुर्रे की व्यक्तिगत आवश्यक परिक्षण गुजरात के शहरी और ग्रामीण शिक्षकों को न्यादर्श के रूप में यादृच्छिक विधि से चुना गया। 111 शिक्षकों को शामिल किया गया। अनौपचारिक गुजराती

शिक्षकों का एक नियंत्रित ग्रुप भी न्यादर्श के रूप में लिया गया। परिणाम यह आया कि गुजराती नहीं थे वे अधिक आत्मकेन्द्रित और अधिक अध्ययनशील थे जबकि ग्रामीण-शहरी गुजराती शिक्षक केन्द्रित थे और धार्मिक थें।

❖ **महेश्वरी पी.सी. ने (1989)-**

रोहिलखंड विद्यापीठ के सामान्य, पिछड़े वर्ग, अनुसूचित जाति के शिक्षकों, प्रशिक्षकों का अध्यापन अभिवृत्ति तथा मूल्य, बुद्धि, लिंग के संबंध का अध्ययन किया। जिसका मुख्य उद्देश्य शिक्षक प्रशिक्षकों में मूल्य एवं अध्यापन अभिवृत्ति के संबंध का अध्ययन करना था। उपरोक्त वर्ग के शिक्षक प्रशिक्षकों में लिंगभेद का अध्यापन अभिवृत्ति पर प्रभाव का अध्ययन करना था।

रोहिलखंड विद्यापीठ के 10 कॉलेजों से सामान्य वर्ग के 426 शिक्षक प्रशिक्षक पिछड़े वर्ग के 95 शिक्षक प्रशिक्षक अनुसूचित जाति के 97 शिक्षक प्रशिक्षक को न्यादर्श के रूप में चुना गया। प्रदत्तों के संकलन के लिए निम्न उपकरणें का उपयोग किया गया।

- अहलूवालिया एस.पी. द्वारा निर्मित शिक्षकों की अभिवृत्ति सूची।
- आर.के. टंडन द्वारा निर्मित समूह बुद्धि परीक्षण।
- आर.के. ओझा द्वारा निर्मित मूल्य परीक्षण प्रदत्तों के विश्लेषण के लिए 'टी' परीक्षण तथा सहसंबंध का प्रयोग किया गया।

निष्कर्ष- अनुसूचित जाति एवं पिछड़े वर्ग की अपेक्षा सामान्य वर्ग के शिक्षक प्रशिक्षकों में अध्यापन अभिवृत्ति प्राप्तांक में सार्थकता पायी गयी।

- स्त्री-पुरूष शिक्षक प्रशिक्षकों में अध्यापन अभिवृत्ति के अंतर में सार्थकता नहीं पायी गयी।
- सामान्य वर्ग के शिक्षक प्रशिक्षकों में अन्य दो वर्गो की अपेक्षा अध्यापक अभिवृत्ति अधिक देखने को मिली।

❖ **गणपती,दास (1992) ने**

शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों के आत्म संप्रत्यय एवं अध्यापन व्यवसाय संबंधी अभिवृत्ति का अध्ययन किया।

उपरोक्त शोधकार्य में शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों की अध्यापन व्यवसाय संबंधी अभिवृत्ति एवं शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों का आत्म संप्रत्यय का अध्यापन व्यवसाय संबंधी अभिवृत्ति का शोध करना यह मुख्य उद्देश्य है। नो अध्यापक महाविद्यालय में से 723 शिक्षक प्रशिक्षणार्थीयों का न्यादर्श के रूप में चयन किया गया। प्रदत्तों के संकलन हेतु अहलूवालिया की शिक्षक अभिवृत्ति सूची एवं आत्म संप्रत्यय मापनी का उपयोग किया गया। प्रदत्तों के विश्लेषण के लिए 'टी' परीक्षण, पिअरसन की गुणांक सहसंबंध का प्रयोग किया गया। उपरोक्त शोध कार्य में यह पाया गया कि, महिला एवं पुरूष शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों में अध्यापन व्यवसाय संबंधी अनुकूल अभिवृत्ति है।

❖ **पाण्डे, एम. और मैखुरी, आर. (1999) ने**

प्रभावशाली और प्रभावहीन शिक्षकों का शिक्षण व्यवसाय अभिवृत्ति का अध्ययन किया।

इस शोध का मुख्य उद्देश्य शिक्षकों की प्रभावशीलता तथा अप्रभावशीलता का अध्यापन संबंधी अभिवृत्ति में आयु व अनुभव के आधार पर अध्ययन करना था। न्यादर्श के साथ में पूरी तेहरी जिले के 100 शिक्षकों को माध्यमिक स्कूल से यादृच्छिक विधि से चयनित किया

गया है। प्रदत्त संकलन के लिए शिक्षक प्रभावशाली मापनी कुमार और मुथ्या तथा अध्यापन अभिवृत्ति मापनी (कटिया व वैनर) का प्रयोग किया गया। प्रदत्त संकलन के विश्लेषण के लिये मध्यमान, प्रमाणित विचलन और 'टी' परीक्षण किया गया।

अधिक तथा कम अनुभव वाले प्रभावशाली शिक्षकों की अध्यापन संबंधी अभिवृत्ति में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया गया, जबकि अधिक प्रभावशाली अनुभव वाले शिक्षकों की अध्यापन व्यवसाय संबंधी अभिवृत्ति सकारात्मक पायी गयी। कम अनुभव प्रभावशाली शिक्षकों से और नये अप्रभावशाली शिक्षकों का अध्यापन व्यवसाय संबंधी अभिवृत्ति विषेधात्मक पायी गयी।

❖ **पाण्डा, बी.बी. (1992) ने**

आसाम औा उड़ीसा के कॉलेज शिक्षकों के शिक्षण व्यवसाय एवं कार्य संतुष्टि के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन किया।

उद्देश्य–

- आसाम और उड़ीसा के कॉलेज शिक्षकों का शिक्षण व्यवसाय के प्रति अभिवृत्ति और विभिन्न वर्गो जैसे की लिंग, अनुभव, स्थान, स्तर के आधार पर अध्ययन करना।
- आसाम और उड़ीसा के कॉलेज शिक्षकों का कार्य संतुष्टि की डिग्री का लिंग, अनुभव, स्थान तथा स्तर के आधार पर अध्ययन करना।
- आसाम और उड़ीसा के कॉलेज शिक्षकों का शिक्षण व्यवसाय और कार्य संतुष्टि की अभिवृत्ति के संबंध का अध्ययन करना।

निष्कर्ष–

- आसाम और उड़ीसा के ज्यादातर कॉलेज शिक्षकों की अभिवृत्ति शिक्षण व्यवसाय के प्रति है। दोनों ही राज्यों के 25 प्रतिशत कॉलेज लिंग, अनुभव, स्थान, स्तर के आधार पर भी शिक्षण व्यवसाय के प्रति अभिवृत्ति रखते हैं।
- आसाम और उड़ीसा के कॉलेज शिक्षकों में लिंग, अनुभव, स्थान, तथा स्तर के आधार पर शिक्षण व्यवसाय अभिवृत्ति में सार्थक अंतर नहीं है।

❖ **पाण्डे, उषा (1988) ने**

महिला शिक्षक प्रशिक्षणार्थी की शिक्षण व्यवसाय से संबंधित अध्यापन अभिवृत्ति का अध्ययन किया।

निष्कर्ष से पता लगता है कि महिला शिक्षण को अध्यापन व्यवसाय में अधिक रूची है। उनके लिये शिक्षण व्यवसाय एक सुवर्ण संधि होती है, क्योंकि दूसरा व्यवसाय जल्दी से नहीं मिल पाता। इसलिए अधिक महिला को शिक्षण अध्यापन व्यवसाय में अधिक रूचि है।

❖ **रेड्डी बालकिष्ना पी (1989) ने**

प्राथमिक विद्यालय के शिक्षकों का कार्य संतुष्टि, शिक्षण व्यवसाय अभिवृत्ति का अध्ययन किया।

उद्देश्य–

- व्यवसाय संतुष्टि स्तर अध्यापन के प्रति अभिवृत्ति और व्यवसाय अभिरूचि के स्तर का अध्ययन।

- लिंग, वैवाहिक स्तर, शैक्षिक योग्यता, कुटुंब का आकार, अनुभव, उम्र तथा व्यक्तित्व कारक के आधार पर व्यवसाय संबंधों का अध्ययन करना।

निष्कर्ष–

- अपने व्यवसाय के प्रति सभी शिक्षक संतुष्ट है।
- व्यवसाय के विविध कारकों का अभ्यास करने से पता चलता है कि आठ कारकों के प्रति शिक्षकों में व्यवसाय संतुष्टि देखने को मिलती है, जबकि सात कारकों के प्रति शिक्षकों में असंतुष्टि दिखाई देती है।
- व्यक्तित्व के चार कारकों और व्यवसाय सूची की जो शैक्षिक योग्यता के आधार पर वर्गीकृत की गयी है उसमें सार्थक अंतर है।

❖ **रामकिष्ना, डी. (1980) ने**

कॉलेज शिक्षकों के व्यवसाय संतुष्टि, शिक्षण अध्यापन अभिवृत्ति एवं व्यवसाय सहभाग का अध्ययन किया।

उद्देश्य–

- कॉलेज शिक्षकों का व्यवसाय संतुष्टि स्तर का अध्ययन करना।
- शिक्षकों के व्यक्तित्व, जनतांत्रिक, चर एवं व्यवसाय संतुष्टि का अध्ययन करना।
- शिक्षण अध्यापन अभिवृत्ति एवं शिक्षण व्यवसाय संतुष्टि के संबंध का अध्ययन करना।
- व्यवसाय संतुष्टि एवं व्यवसाय सहभाग का संबंध का अध्ययन करना।

निष्कर्ष– कॉलेज के शिक्षण अपने व्यवसाय में संतुष्ट थे। खाजगी कॉलेज के शिक्षक शासकीय कॉलेज के शिक्षक से अधिक संतुष्ट थे। महिला शिक्षिका, पुरूष शिक्षक अपने व्यवसाय में अधिक संतुष्ट थे।

❖ **रेड्डी, बुम. एन. (1991)**

आंध्रप्रदेश में माध्यमिक शिक्षकों में अध्यापन अभिक्षमता एवं अभिवृत्ति का अध्ययन।

उपरोक्त शोधकार्य में शिक्षकों के लिंग, आयु विभाग एवं प्रवर्ग का अध्यापन अभिवृत्ति पर परिणाम परीक्षण करना यह मुख्य उद्देश्य है। नियमित बी.एड्. के 332 प्रशिक्षणार्थी एवं 80 माध्यमिक शिक्षकों को न्यादर्श के रूप में चयन किया गया। प्रदत्तों संकलन हेतु TAT (Tematic appreciation Test) एवं अध्यापन अभिवृत्ति सूची का उपयोग किया गया। प्रदत्तों के विश्लेषण के लिए मध्यमान, प्रमाणित 'टी' अनुपात, सहसंबंध और कार्य–वर्ग परीक्षण का उपयोग किया गया।

❖ **रेनॉल्ड (1976) रेटर एवं अन्य (1979) मोर्टीमोंर एवं अन्य (1988) के अनुसार** "कुछ साध्य ऐसे है जिससे कुछ महत्वपूर्ण सामाजिक विभिन्नताएँ प्रभावी परीणाम जैसे उपस्थिति, व्यवहार तथा अभिवृत्ति का विवरण हैं।"

❖ **श्रीनिवास, व्ही. (1992)**

ने प्राथमिक विद्यालय शिक्षकों का व्यक्तित्व गुण और शिक्षण अध्यापन व्यवसाय के प्रति दृष्टिकोण।

उद्देश्य–

- प्राथमिक विद्यालय के शिक्षकों का अध्यापन दृष्टिकोण का मापन करना+सामूहिक अनुभव और संस्थान के व्यवस्थापन के प्रकार।

- लिंग, सामूहिक अनुभव और व्यवस्थापन के प्रकार इनके आधार पर प्राथमिक शिक्षकों का दृष्टिकोण के प्रकार इनके आधार पर प्राथमिक शिक्षकों का दृष्टिकोण की सार्थकता मापन करना।
- प्राथमिक विद्यालय के शिक्षकों का व्यक्तित्व गुणों का लिंग, अनुभव, समुदाय और व्यवस्थापन के प्रकार के आधार पर मापन करना।

निष्कर्ष– शिक्षक अध्यापन अभिवृत्ति पर लिंग, शिक्षा, अनुभव एवं समूह का कोई प्रभाव नहीं पड़ता है। शासकीय विद्यालय शिक्षक और अनुदानित विद्यालय शिक्षक के अध्यापन अभिवृत्ति में सार्थक अंतर है। सहानुभूति, अंर्तमुखी का महिला शिक्षक पर प्रभाव पड़ता है। सहानुभूति एवं न्यूट्रीसियम इन गुण का शासकीय और अनुदानित विद्यालय शिक्षक में सार्थकता है।

❖ **सिंग, एस.के. (1988)**

ने शिक्षक के कक्षा में शाब्दिक संवाद एवं शिक्षक अध्यापन अभिवृत्ति के संबंध का अध्ययन किया।

उद्देश्य– शिक्षकों के व्यवस्थित प्रशिक्षण का विकास एवं प्रक्षेपण व्यवहार और शिक्षण अध्यापन अभिवृत्ति इनके बीच संबंध निर्धारित करना।

निष्कर्ष– शिक्षक अध्यापन अभिवृत्ति के संबंधित प्रश्न अनुपात में शिक्षकों के अध्यापन, विषय ग्रुप चर्चा में सार्थकता पायी गयी। शिक्षक के अध्यापन अभिवृत्ति और कक्षाध्यापन में शाब्दिक संवाद में सार्थकता पायी गयी।

❖ **सरन, एस.ए. ने –**

शिक्षकों का शिक्षण अध्यापन अभिवृत्ति एवं व्यक्तित्व कारक से संबंधित शिक्षा स्तर एवं अनुभव के आधार पर अध्ययन किया गया।

उद्देश्य– समायोजन स्तर, उपलब्धि गरज इण्डूरन्स एवं शिक्षा स्तर पर शिक्षकों का अध्ययन करना।

निष्कर्ष– शिक्षकों का शिक्षण अध्यापन अभिवृत्ति का दृष्टिकोण सकारात्मक था। जिन शिक्षकों का दृष्टिकोण सकारात्मक था उनकी रूची मेकॉनिकल क्षेत्र में अधिक थी। जिन शिक्षकों का दृष्टिकोण नकारात्मक था उनकी रूची एग्रीकल्चर एवं स्पोर्ट क्षेत्र में थी। शिक्षकों में शिक्षा अनुभव एवं समायोजन में सार्थक अंतर नहीं था।

❖ **सक्सेना, ज्योत्सना. (1995) ने**

शिक्षकों के प्रभावशाली का संबंध उनके समायोजन व्यवसाय संतुष्टि एवं शिक्षण व्यवसाय से संबंधित अध्यापन अभिवृत्ति का अध्ययन करना।

उद्देश्य–

- प्रभावशाली शिक्षक पहचानना।
- शिक्षक का प्रभाव एवं समायोजन में संबंध, शिक्षक का प्रभाव एवं व्यवसाय संतुष्टि, शिक्षक का प्रभाव एवं अध्यापन व्यवसाय में अभिवृत्ति में सार्थकता इनका संबंध देखना।

निष्कर्ष–

- प्रभावशाली एवं अप्रभावशाली शिक्षकों में समायोजन और अपने व्यवसाय में संतुष्ट है तथा शिक्षण अध्यापन व्यवसाय अभिवृत्ति के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण है।